9

आकाश और पृथ्वी का भविष्य

" परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे" (2 पतरस 3:10)।

सब मरे हुओं की देहों के जी उठने तथा पृथ्वी के सभी जीवित लोगों के चले जाने से, पृथ्वी का और सृजे गए आकाशों का क्या होगा? बहुत से लोग इन सम्भावनाओं पर चकित होते हैं कि "क्या आकाश और पृथ्वी अपनी वर्तमान भौतिक स्थिति में बने रहेंगे?"; "क्या पृथ्वी की मरम्मत की जाएगी कि आदम और हव्वा के द्वारा पाप से पहले की इसकी स्वर्गलोक वाली स्थिति वापस मिल सके?"; "क्या यह आत्मिक निवास स्थान में बदल जाएगी जिसमें आत्मिक देहों में परिवर्तित हुए लोग रह सकें?"; "क्या यह नष्ट होकर मिट जाएगी, कि फिर कभी यह रूप न बन सके?"

आकाश और पृथ्वी के भविष्य पर चर्चा करने से पहले, हमें यह निश्चय होना आवश्यक है कि हम इन शब्दों के अर्थों को समझते हैं। "आकाश" शब्द का इस्तेमाल इब्रानी शब्द *shamayim* और यूनानी शब्द *auranos* का अनुवाद करने के लिए किया जाता है। "पृथ्वी" शब्द का इस्तेमाल इब्रानी शब्द *erets* तथा यूनानी शब्द *ge* के अनुवाद के लिए किया जाता है।

बाइबल में "स्वर्ग," "आकाश" तथा "sky"[1] का इस्तेमाल तीन क्षेत्रों के लिए होता है (2 कुरिन्थियों 12:2): (1) पृथ्वी के इर्द-गिर्द का वातावरण (उत्पत्ति 11:4; 27:28;[2] लूका 18:13); (2) सृजा गया संसार, जिसमें सभी आकाशीय वस्तुएं आ जाती हैं (उत्पत्ति 1:1, 14-17; भजन संहिता 19:1);[3] और (3) अनन्त, अभौतकीय क्षेत्र जहां परमेश्वर अपनी स्वर्गीय सेनाओं के साथ वास करता है (उत्पत्ति 28:17; भजन संहिता 80:14; देखें यशायाह 66:1; मत्ती 5:12)।

"पृथ्वी" का इस्तेमाल अधिकतर उस ग्रह के रूप में, जिस पर हम रहते हैं या उस सामग्री के लिए जिससे यह बनी है मिट्टी, धरती के अर्थ में किया जाता है। इसे "संसार" (यू.: *kosmos*) के साथ नहीं मिलाया जाता, जो आम तौर पर मनुष्य जाति, राष्ट्रों तथा मनुष्य के संगठनों सहित या इस संसार में पाए जाने वाले पापपूर्ण व्यवहार के लिए इस्तेमाल होता है।

''पृथ्वी'' तथा ''संसार'' में एक अच्छा अन्तर 2 पतरस 3:5, 6 में दिखाया गया है। ''जगत'' अर्थात प्राचीन संसार जो नूह के समय पृथ्वी पर था, नष्ट हुआ था न कि पृथ्वी, जो सृष्टि के समय, ''जल में से बनी और जल में स्थिर है।'' यह संसार अपनी अभिलाषाओं सहित (1 यूहन्ना 2:15-17) कब मिटेगा, यानी पृथ्वी और आकाश का अर्थात संसार का क्या होगा?

विरोध में तर्क

यह मानने वाले कि पृथ्वी मिटेगी नहीं, बल्कि बनी रहेगी कई वचनों को उद्धृत करते हैं जो उनके तर्क को साबित करते प्रतीत होते हैं: सभोपदेशक 1:4; यशायाह 45:18; मत्ती 5:5.

''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (मत्ती 5:5) को साबित करने के लिए कि वर्तमान युग के बजाय भविष्य के युग की पृथ्वी की बात है, पहले यह साबित करना आवश्यक है कि यह पृथ्वी सदा तक बनी रहेगी। *यदि यह साबित हो जाए कि पृथ्वी मिट जाएगी, तो यह बात वर्तमान में पृथ्वी के लिए है, न कि पृथ्वी की किसी भावी स्थिति के लिए।*

यह तर्क कि पृथ्वी ''बसने'' के लिए बनाई गई थी और इसे ''व्यर्थ में'' नहीं बनाया गया था (यशायाह 45:18) यह साबित नहीं करता कि यह कभी मिटेगी नहीं। पृथ्वी की सृष्टि व्यर्थ का प्रयास नहीं रहा है, क्योंकि यह आबाद हुई है और हज़ारों वर्षों से लोग इस पर बस रहे हैं। इस आयत में यह नहीं कहा गया कि पृथ्वी ''सदा के लिए'' बसने के लिए होगी, इसलिए इससे यह साबित नहीं होता कि पृथ्वी मिटेगी नहीं।

एक आयत जिससे यह साबित हो सकता है कि पृथ्वी मिटेगी नहीं, वह सभोपदेशक 1:4 है, जिसमें कहा गया है ''एक पीढ़ी जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है'' (भजन संहिता 104:5 भी देखें)। भजन संहिता 148:6 में आकाशों के भी सदा तक रहने की बात कही गई है। यदि इन आयतों का अर्थ यही है, जो इन्हें पढ़ने से लगता है तो यह शिक्षा कि आकाश और पृथ्वी कभी नष्ट नहीं होंगे, साबित हो जाती है और मामला दफ़न हो जाता है; परन्तु इस प्रमाण की समीक्षा और बारीकी से की जानी आवश्यक है।

हो सकता है कि इन आयतों में अनादि आकाश और पृथ्वी की शिक्षा न हो। इब्रानी शब्द *olam* जिसका अनुवाद ''सर्वदा'' हुआ है (''अनिश्चित समय तक,'' जहोवा'स विटनेसस द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन के अनुसार), का अर्थ ''कभी न खत्म होने वाला'' नहीं है, क्योंकि इसमें कई बातें हैं ,जो खत्म हो चुकी हैं या हो जाएंगी।[4] *Olam* में ''अन्तकाल के लिए अस्तित्व में होने'' के बजाय ''अस्तित्व बने रहना'' या ''चुगों हक'' का विचार अधिक है। इस कारण, हमारे लिए यह तय करने के लिए कि जो संकेत दिया गया है, वह समय के एक काल तक रहेगा या अनन्तकाल तक रहेगा और जानकारी भी आवश्यक है। ''सर्वदा'' का इस्तेमाल हम यह अर्थ देने के लिए करते हैं कि ''तू हमेशा यही कहता है'' या ''वह हमेशा ऐसा ही करता है।'' ऐसी अभिव्यक्तियों से हमारा यह अभिप्राय नहीं होता कि ये चीज़ें अनन्तकाल तक बनी रहेंगी; बल्कि हमारा यह

अर्थ होता है कि ऐसा होता रहता है।

अगली आयतों में, *ओलम* जिसका अनुवाद कुछ संस्करणों में ''सर्वदा,'' ''सदा'' या ''जीवन भर'', हुआ है, स्पष्टतया वहां इसका अर्थ अनन्तकाल नहीं है:

(1) खतने की वाचा *ओलम* थी (उत्पत्ति 17:7, 8, 13, 19), परन्तु यह अब लागू नहीं है (गलातियों 5:2, 6; 6:15)।

(2) फसह का पर्व, *ओलम* था (निर्गमन 12:14, 17, 24), परन्तु यह मसीही लोगों द्वारा मनाया जाने वाला नई वाचा का पर्व नहीं है।

(3) इब्रानी सेवक या गैर इब्रानी सेवक जो अपने मालिक की सेवा *ओलम* करना चाहे तो कर सकता था (निर्गमन 21:6; देखें लैव्यव्यवस्था 25:45, 46); परन्तु, मरने के बाद सेवक या गुलाम अपने मालिक के बन्धन से छूट जाता था (अय्यूब 3:19)।

(4) पवित्र स्थान की देखभाल तथा याजकाई के वस्त्र पहनने की हारून के बेटों की ज़िम्मेदारी *ओलम* थी (निर्गमन 27:21; देखें 28:43; 29:9)। याजकाई के बदलने के साथ ही यह खत्म हो गई (इब्रानियों 7:12)।

(5) हारून के बेटों को बलिदानों का भाग *ओलम* मिलना था (निर्गमन 29:28; लैव्यव्यवस्था 7:34, 36)। पशुओं का बलिदान बन्द हो चुका है।

(6) प्रायश्चित का वार्षिक बलिदान *ओलम* था (लैव्यवस्यवस्था 16:34)। अब यह लागू नहीं रहा है।

ये हवाले केवल एक नमूना हैं, परन्तु यह दिखाने के लिए कि *ओलम* का अर्थ आवश्यक नहीं कि ''सर्वदा'' या ''कभी न खत्म होने'' के अर्थ में ही हो, काफ़ी है। इसका इस्तेमाल परमेश्वर (निर्गमन 15:18; भजन संहिता 90:2) तथा अन्य आयतों की तरह यह दिखाने के लिए अनन्त के अर्थ में किया जाता सकता है कि *ओलम* का यह अर्थ खत्म हो जाएगा। ऐसे मामलों में, *ओलम* का अर्थ ''निरन्तर'' या ''युग तक'' के रूप में माना जाना चाहिए, न कि ''अनन्त।'' यदि बाइबल कहती है कि आकाश और पृथ्वी मिट जाएंगे, तो आकाश और पृथ्वी के सम्बन्ध में *ओलम* का अर्थ ''युग तक'' माना जाए न कि ''अनन्तकाल।''

पक्ष में तर्क

बाइबल सिखाती है कि आकाश और पृथ्वी मिट जाएंगे, परन्तु पुराना नियम इस विषय पर बहुत कम बात करता है। उत्पत्ति 8:22 का अर्थ यह निकाला जा सकता है कि पृथ्वी सदा तक नहीं रहेगी:

> जब तक पृथ्वी बनी रहेगी,
> तब तक बोने और काटने के समय,
> ठण्ड और पतन,
> धूपकाल और शीतकाल,
> दिन और रात,
> निरन्तर होते चले जाएंगे।

यदि पृथ्वी सदा तक रहने वाली है, तो इस आयत का यह अर्थ है कि ये बातें कभी बन्द नहीं होंगी। यदि पृथ्वी सदा तक नहीं रहेगी, तो ये सब तब तक ही बने रहेंगे जब तक यह है। पृथ्वी का अन्त आवश्यक नहीं कि इस आयत के अनुसार हो।

नये नियम में भजन संहिता 102 से एक आयत ली गई है, जिसमें कहा गया है (इब्रानियों 1:10-12):

> आदि में तू ने पृथ्वी की नेंव डाली और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र की नाईं बदलेगा, और वह तो बदल जाएगा; परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का (भजन संहिता 102:25-27)।

इस आयत में यह पुष्टि है कि आकाश और पृथ्वी (1) नष्ट हो जाएगा, (2) बदल जाएगा, (3) कपड़े की नाईं बदला जाएगा और (4) मिट जाएगा। ''नाश होगा'' *abad* का अनुवाद है, जिसका अर्थ ''जैसे मोम आग की आंच से पिघल जाता है, वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर की उपस्थिति से नाश हों'' (भजन संहिता 68:2) बात की तरह ''नष्ट होना'' या ''खत्म होना'' है। जैसे मोम पिघलकर जल जाती है और नष्ट हो जाती है; वैसे ही दुष्टों के शरीर नष्ट होंगे। परमेश्वर के विपरीत जिसके दिनों का अन्त नहीं होगा, आकाश और पृथ्वी भी से ही मिट जाएंगे।

कुछ लोगों को यह समझ नहीं आता कि इस आयत में सिखाया गया है कि आकाश और पृथ्वी मिट जाएंगे, क्योंकि इसमें कहा गया है कि ''तू उसे बदलेगा'' (भजन संहिता 102:26) वे इसका अर्थ यह निकालते हैं कि आकाश और पृथ्वी की मरम्मत होगी और उन्हें एक नया रूप दिया जाएगा। परन्तु इस आयत में कहा गया है, ''तू उसको वस्त्र की नाईं बदलेगा।'' पुराने वस्त्रों को बदलने पर क्या किया जाता है? उन्हें फैंक दिया जाता है। आकाश और पृथ्वी कपड़ों की तरह बदल दिए जाएंगे, वे बदल दिए जाने पर उतार दिए जाएंगे, फैंक दिए जाएंगे और उनकी जगह नये वस्त्र होंगे।

बेशक जिस अनुवाद का वे इस्तेमाल करते हैं (द न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन) जहोवा'स विटनेसस की शिक्षा के विपरीत, इस आयत में कहा गया है, ''वह तो नाश होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र की नाईं बदलेगा, और वह बदल जाएगा'' (भजन संहिता 102:26)। स्पष्टतया इस आयत में सिखाया गया है कि आकाश और पृथ्वी खत्म हो जाएंगे, मिट जाएंगे और उनकी जगह नया आकाश और पृथ्वी होगा।

नये नियम में इस विषय को आगे बढ़ाया गया है। यीशु ने कहा, ''आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (मत्ती 24:35)। कुछ लोग यीशु की बात के कारण ''आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है'' इस शिक्षा को नरम करने की कोशिश करते हैं (लूका 16:17)। इस आयत के आधार पर वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु के कहने का अर्थ मत्ती 24:35 में कही गई बात

की तरह ही है कि आकाश और पृथ्वी तो टल सकते हैं: पर उसके वचन नहीं। परन्तु ये वही बातें नहीं हैं यानी वे उसी स्थिति में कही गई हैं। इसलिए हर एक को उसी के संदर्भ में समझा जाना चाहिए और किसी दूसरी बात को साबित करने के लिए उसका इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। यीशु ने तो केवल इतना कहा कि आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे। हमारे प्रभु से उलझ कर कौन सही ठहर सकता है ?

पौलुस ने भी वही बात सिखाई जो यीशु ने बताई थी। उसने लिखा, ''हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं। क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं'' (2 कुरिन्थियों 4:18)। पौलुस ने उन वस्तुओं में भिन्नता की, जो सदा तक नहीं रहेंगी अर्थात उनमें वे वस्तुएं जो देखी जा सकती हैं और जो सदा तक रहने वाली हैं और दिखाई नहीं दे सकतीं। भौतिक संसार को, जिसमें पृथ्वी भी शामिल है देखा जा सकता हैं; इसलिए यह अस्थाई है।[5] आत्मिक वस्तुएं अदृश्य हैं; इसलिए वे सदा तक रहेंगी।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने हाग्गै को उद्धृत किया और फिर परमेश्वर की प्रतिज्ञा की व्याख्या की:

> एक बार फिर मैं केवल पृथ्वी को नहीं, वरन आकाश को भी हिला दूंगा। और यह वाक्य ''एक बार फिर'' इस बात को प्रकट करता है, कि जो वस्तुएं हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई वस्तुएं होने के कारण टल जाएंगी; ताकि जो वस्तुएं हिलाई नहीं जातीं, वे अटल बनी रहें (इब्रानियों 12:26, 27)।

जो वस्तुएं हिलाई जा सकती हैं अर्थात सृजी हुई वस्तुएं, आकाश और पृथ्वी, वे इस वचन के अनुसार मिटाई जाएंगी।

2 पतरस 3:7-13 में आकाश और पृथ्वी के टलने का सम्पूर्ण विवरण है: ''पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिए रखे हैं, कि जलाए जाएं'' (आयत 7); ''आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे''[6] (आयत 10); ''ये सब वस्तुएं, इसी रीति से पिघलने वाली हैं'' (आयत 11); ''आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे'' (आयत 12)!

प्रकाशितवाक्य में यह कहते हुए कि ''मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको, जो उस पर बैठा हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, ... '' (20:11); ''फिर मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा'' (21:1) पृथ्वी के भविष्य के बारे में तर्क को समेट दिया। वर्तमान आकाश और, जो पहले हैं, अपनी पूर्वकालीन, स्वर्गलोक की मूल अवस्था में नहीं आएंगे या एक आत्मिक निवास के लिए नहीं बदलेंगे। वे जल कर मिट जाएंगे। परमेश्वर ने यह नहीं कहा कि वह उनकी मरम्मत करेगा। यूहन्ना ने लिखा है, ''जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, 'देख मैं सब कुछ नया कर देता हूं' '' (प्रकाशितवाक्य 21:5)। परमेश्वर आत्मिक

जीवन के लिए एक नया, अभौतिक निवास उपलब्ध करवाएगा (1 कुरिन्थियों 15:44)।

सारांश

पृथ्वी को परमेश्वर ने बसने के लिए बनाया था। उसने आकाशों को अपनी महिमा करने वाले बनाया (भजन संहिता 19:1) और चिह्नों तथा मौसमों के लिए बनाया (उत्पत्ति 1:14)। बेशक इनकी बनावट से लगे कि यह सदा तक रहने वाले हैं, परन्तु यह संसार ऐसे बिल्डिंग ब्लॉक्स से बना है, जो सम्भालकर नहीं रखे जा सकते और ज्वलनशील हैं। जब परमेश्वर आकाशगंगाओं, तारों तथा पृथ्वी में ऊर्जा छोड़ेगा तो सब भौतिक वस्तुएं मिट जाएंगी। इसके साथ ही यह सब एक बड़े शोर के साथ अलोप हो जाएंगी। नूह के समय में संसार को पानी से नष्ट करने की परमेश्वर की पूरी हुई प्रतिज्ञा इस बात का प्रमाण है कि वह वर्तमान आकाश और पृथ्वी को आग से नष्ट करने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा *करेगा* (2 पतरस 3:5-7)। संसार की सभी वर्तमान भौतिक वास्तविकताओं का अन्त हो जाएगा और फिर से केवल सदा तक रहने वाला आत्मिक संसार ही रहेगा।

हमें सावधान किया गया है, ''जब कि ये सब वस्तुएं इस रीति से पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए, और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए'' (2 पतरस 3:11, 12)।

टिप्पणियां

[1]''Sky'' का इस्तेमाल अंग्रेज़ी अनुवादों NASB, NIV आदि में कहीं-कहीं हुआ है। [2]उत्पत्ति 7:23; 8:2 भी देखें। [3]प्रेरितों 2:19 भी देखें। [4]*ओलम* शब्द पर और चर्चा के लिए ''अनन्त पुरस्कार एवं दण्ड'' पाठ देखें। [5]''अस्थाई'' के लिए यूनानी शब्द *proskairos* है, जिसका अनुवाद कहीं ''थोड़े ही दिन का'' (मत्ती 13:21; मरकुस 4:17) और ''थोड़े दिन'' (इब्रानियों 11:25) हुआ है। [6]कुछ हस्तलिपियों में आयत 10 में ''पाया'' है, हस्तलिपि के प्रमाण के आधार पर ''जल जाएंगे'' (2 पतरस 3:10) के बजाय सही ठहराया जाता है, इन आयतों में अन्य बातें यह प्रमाणित करती हैं कि पृथ्वी सहित, यह संसार जल जाएगा। यदि ''पाया'' को ''जल जाएगा'' से बढ़कर वचन से समर्थन मिलता है, तो अन्य बातों के विरोधाभास से बचने के लिए इसकी व्याख्या यह होगी कि आग से पृथ्वी के तत्व की बनावट का पता चल जाएगा। यद्यपि मनुष्य ने यह सोच लिया है कि पृथ्वी सदा तक रहेगी, परन्तु इसकी अस्थाई, ज्वलनशील प्रकृति ''पता चल जाएगी,'' जब यह पृथ्वी जल जाएगी।